समाज मनोविज्ञान की विधियाँ
(Methods of Social Psychology)

- प्रयोगात्मक विधि
- अप्रयोगात्मक विधि.

APPOINTMENTS → **प्रयोगात्मक विधि (Experimental Method)** —

प्रयोगात्मक विधि में मनोवैज्ञानिक किसी सामाजिक व्यवहार को समझने के लिए एक प्रयोग करते हैं। प्रयोग से तात्पर्य किसी नियंत्रित परिस्थिति में किया गया निरीक्षण से होता है। समाज मनोविज्ञान में किसी प्रयोग का मुख्य उद्देश्य यह देखना होता है कि किसी स्वतंत्र चर का प्रभाव अध्ययन किये जाने वाले सामाजिक व्यवहार पर क्या पड़ता है।

समाज मनोविज्ञान में सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करने के लिए निम्नांकित तीन तरह की प्रयोग विधियाँ अपनायी जाती हैं —

(i) प्रयोगशाला प्रयोग विधि
(ii) क्षेत्र प्रयोग विधि
(iii) स्वाभाविक प्रयोग विधि.

 # प्रयोगशाला प्रयोग विधि — इस विधि में समाज मनोवैज्ञानिक किसी सामाजिक व्यवहार का अध्ययन प्रयोगशाला में प्रयोग के माध्यम से करते हैं। जिसमें एक निश्चित संख्या में प्रयोज्यों का यादृच्छिक रूप से चयन करके प्रयोगशाला के नियंत्रित एवं कृत्रिम परिस्थिति में स्वतंत्र चर एवं आश्रित चर के बीच कारण-परिणाम संबंध स्थापित किया जाता है। समाज मनोविज्ञान में इस विधि द्वारा किये गये शोध को उद्दीपन-अनुक्रिया शोध भी कहा जाता है।

प्रयोगशाला प्रयोग विधि में चूँकि प्रयोग एक नियंत्रित परिस्थिति में की जाती है, अतः प्राप्त परिणाम अधिक विश्वसनीय एवं वस्तुनिष्ठ होते हैं। इसकी आंतरिक वैधता भी काफी अधिक होती है। इसके फलस्वरूप प्राप्त परिणाम अधिक निर्भर योग्य हो जाते हैं परंतु बाह्य वैधता कम हो जाती है, जिससे इसका सामान्यीकरण वास्तविक परिस्थिति में ~~...~~ कभी-कभी कठिन होता है। इसका

एक सामान्य दोष यह भी है कि इसी तरह के सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन प्रयोगशाला की नियंत्रित परिस्थिति में संभव नहीं हो पाता है। जैसे— महामारी, युद्ध, क्रांति आदि का प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार पर कैसे पड़ता है, का अध्ययन इस विधि से संभव नहीं है।

 # क्षेत्र प्रयोग विधि — इस विधि में किसी सामाजिक व्यवहार का अध्ययन प्रयोगशाला में न करके वास्तविक परिस्थिति में किया जाता है, जिसे समाज मनोवैज्ञानिकों ने क्षेत्र कहा है। प्रयोगकर्ता क्षेत्र में ही स्वतंत्र चर में जोड़-तोड़ करता है और उसका प्रभाव आश्रित चर पर देखता है। साथ ही बहिरंग चर को नियंत्रित भी करता है। चूंकि प्रयोग वास्तविक परिस्थिति में की जाती है, इसलिए बहिरंग चरों पर पूर्ण नियंत्रण संभव नहीं हो पाता है। परंतु इससे प्राप्त परिणाम का सामान्यीकरण अधिक विश्वसनीय ढंग से किया जा सकता है। अर्थात् इस विधि में बाह्य वैधता अधिक होती है।

Worchel & Cooper (1979) ने भी कहा है कि— "अतः क्षेत्र प्रयोग में परिणाम के सामान्यीकरण का गुण तो होता है, परंतु इसमें यह गुण प्रायः बहिरंग चरों पर नियंत्रण की कुर्बानी की कीमत पर विकसित होती है।"

 # स्वाभाविक प्रयोग विधि — कभी-कभी समाज मनोवैज्ञानिकों को कुछ इस प्रकार के सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन करना पड़ता है, जिसमें स्वतंत्र चर में कुछ नैतिक तथा मानवीय प्रतिबंध के कारण उसमें जोड़-तोड़ करना संभव नहीं हो पाता है, तो स्वाभाविक प्रयोग विधि का प्रयोग किया जाता है। जैसे— महामारी, बाढ़, भूकंप, परिवार में किसी सदस्य की मृत्यु आदि कुछ इस प्रकार के कारक हैं, जिन्हें कोई भी प्रयोगकर्ता व्यक्तियों के व्यवहारों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन के उद्देश्य से उत्पन्न नहीं कर सकता है। वह स्वाभाविक रूप से ऐसी स्थिति उत्पन्न का इंतजार

NOTES

करता है और जब स्वाभाविक रूप से ऐसी परिस्थिति उत्पन्न होती है तो वह व्यक्तियों के सामाजिक व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन कर आँकड़े एकत्रित करता है इसे ही स्वाभाविक प्रयोग विधि कहा जाता है। इस विधि से प्राप्त परिणाम की वैधता काफी अधिक होती है। परंतु प्रयोज्यों का यादृच्छिक चयन संभव नहीं हो पाता है।

इसप्रकार समाज मनोविज्ञान में प्रयोगात्मक विधि के उपर्युक्त तीन उपविधियों का प्रयोग मनोवैज्ञानिकों द्वारा किया जाता है। जिनकी अपने-अपने गुण एवं दोष हैं फिर भी आधुनिक समाज मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला प्रयोग को सर्वाधिक पसंद करते हैं और जहाँ इस विधि से प्रयोग संभव नहीं हो पाता है वहाँ वे क्षेत्र प्रयोग विधि का प्रयोग करना अधिक पसंद करते हैं।

Scanned with CamScanner